स

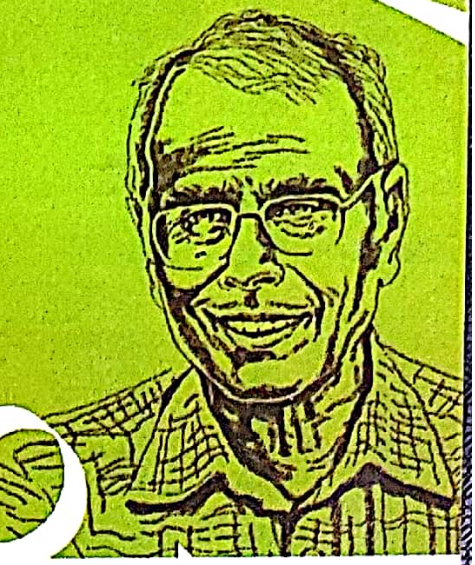

आओ विवेकशील बनें

डॉ. नरेंद्र दाभोलकर

प्रधान सम्पादक
डॉ. सुनील कुमार लवटे

अनुवाद
डॉ. अमोल पालकर

Scanned by CamScanner

आओ विवेकशील बनें

डॉ. नरेंद्र दाभोलकर

अनुवाद
डॉ. अमोल पालकर

प्रधान सम्पादक
डॉ. सुनीलकुमार लवटे

समन्वयक सम्पादक
डॉ. चन्दा सोनकर

सार्थक
राजकमल प्रकाशन का उपक्रम

Scanned by CamScanner

मनोविकास प्रकाशन द्वारा जनवरी, 2016 में प्रकाशित मूल मराठी पुस्तक *ठरलं... डोळस व्हायचंच* का हिन्दी अनुवाद

ISBN : 978-93-88933-64-3

मूल्य : ₹150

© डॉ. शैला दाभोलकर

पहला संस्करण : 2019

राजकमल प्रकाशन का उपक्रम

प्रकाशक
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002

शाखाएँ
अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-211 001
36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017
वेबसाइट : www.rajkamalprakashan.com
ई-मेल : info@rajkamalprakashan.com

मुद्रक
बी.के. ऑफ़सेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

AAO VIVEKSHEEL BANEIN
by Dr. Narendra Dabholkar
Edited by Dr. Sunil Kumar Lavte

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनःप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Scanned by CamScanner

क्रम

आओ विवेकशील बनें	13
जागो! भूत की विजय हो रही है	16
केवल विचार नहीं साथ में आचार भी ज़रूरी है	19
अक्ल का धुआँ, पैसों की राख	21
न होनेवाली छठी इंद्रिय	24
भूली हुई विरासत	27
श्री गणेश जी का स्मरण करके आग्रह करो	30
फल ज्योतिषशास्त्र की अशास्त्रीयता	33
उठ पगले, तोड़ ज़ंजीरें	36
दिमाग़ : मनुष्य का और कौवे का	39
बोलो चुनौती कब स्वीकार करोगे?	42
अकारण सम्मोहित न होने हेतु	45
सम्मोहन : ग़लतफ़हमियाँ!	48
बच्चा देनेवाले बाबाओं का बन्दोबस्त करना होगा	51
वैभव महालक्ष्मी का व्रत असत्य की पूजा	53
ज्ञान चाहिए, साथ में धीरज भी!	56
असत्यनारायण	59
गाँव से पलायन नहीं मानसिक ग़ुलामी का अनुसरण	62
शनि ग्रह की चुनौती स्वीकारनी ही होगी	65
राष्ट्रीय विज्ञान दिन और कुबेर महालक्ष्मी यज्ञ	68
अमंगल की होली युवाओं के लिए रचनात्मक कार्यक्रम	71

Scanned by CamScanner

अन्धविश्वास उन्मूलन : केवल हिन्दुओं के लिए ही? 74
मन्नत : पशुहत्या का फाँस 77
गिरवी रखी हुई अक्ल 80
ऐसे कैसे हुए पाखंडी 83
इन्हें समझ लो 86
शादी बड़ी धूम-धाम से ही होनी चाहिए? 89
शगुन...पराश्रित मानसिकता 92
भ्रम पैदा करनेवाले विचारों से सावधान 95
गर्व से कहो हम अन्धविश्वासी हैं 98
वास्तुशान्ति की पूजा करने से पहले 101
इसकी छान-बीन कर ही लो 104
निर्भय बनो 107
जनेऊ तोड़ डालो! 110
क्षमा करो कलाम...लेकिन आप भी? 113
सन्त पद और चमत्कार 116
इन वीरांगनाओं को बल दो 119
ईसा के नकली ख़ून के आँसू 122
व्यर्थ रहे तुका के वचन! 125
आसान जवाबों का भूलभूलैयाँ 128
हिन्दुत्व चाहिए, लेकिन कौन-सा? 131
अविवेक की कालिमा 134
विद्वेष को विवेक से पराजित करेंगे 137
साथी हाथ बढ़ाना 142

Scanned by CamScanner

प्रस्तुत पुस्तक डॉ. दाभोलकर के 'सकाळ' अख़बार में छपे स्तम्भ-लेखन का संकलन है। इसमें डॉ. दाभोलकर के पाठकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर हैं लेकिन उनका स्वरूप प्रश्न-उत्तर का नहीं है। यह पत्र-शैली के रूप में किया गया लेखन है। डॉ. दाभोलकर के मतानुसार यह एक कार्यकर्ता का लेखन है।

प्रस्तुत पुस्तक दरअसल युवाओं से संवाद है। डॉ. दाभोलकर यह जानते थे कि परिवर्तन की आधारशीला युवक ही हैं। इसी कारण उन्होंने प्रस्तुत पुस्तक में युवाओं के मन में आनेवाले अन्धविश्वास सम्बन्धी प्रश्नों का वैज्ञानिक ढंग से विवेचन प्रस्तुत किया है। पुस्तक में भूत-प्रेत, ज्योतिष, सम्मोहन, पाखंड, सत्यनारायण, मुहूर्त, वास्तुशास्त्र समारोह, जनेऊ, चमत्कार आदि को लेकर विज्ञानवादी विचार व्यक्त किए गए हैं। यह पुस्तक समाज में प्रचलित अन्धविश्वासों पर एक गम्भीर चिन्तन है।

स

सार्थक

राजकमल प्रकाशन का उपक्रम

E-BOOK

उपलब्ध

आवरण : शुऐब शाहिद

समाज अध्ययन | अनुवाद

₹150

9789388933643

www.rajkamalprakashan.com

Scanned by CamScanner